

# विश्व न्याय मंदिर

रिज़वान 2021

विश्व के बहाईयों को संबोधित

परमप्रिय मित्रों,

प्रभुधर्म के इतिहास में एक अत्यंत ही स्मरणीय अध्याय के अंतिम शब्द लिखे जा चुके हैं, और अब पन्ना पलटता है। यह रिज़वान एक असाधारण वर्ष का, एक पांच वर्षीय योजना का, और 1996 में आरंभ की गई योजनाओं की एक पूरी श्रृंखला के समापन का द्योतक है। योजनाओं की एक नई श्रृंखला, अपने आगमन के संकेत, आगामी रिज़वान से नौ वर्षीय उपक्रम के प्रस्तावना के रूप में प्रभावकारी सिद्ध होने वाले बारहमाह से, दे रहे हैं। हमारे सामने खड़ा है एक समुदाय जिसने बड़ी तेजी से अपनी शक्ति हासिल की है और अब आगे लंबे डग भरने के लिए तैयार है। लेकिन इस बारे में कोई भ्रान्ति नहीं रहनी चाहिए कि इस मुकाम तक पहुंचने के लिए कितने प्रयत्न करने की जरूरत पड़ी थी और इस पथ पर जो अंतर्दृष्टियां प्राप्त की गई हैं उनके लिए कितनी मेहनत करनी पड़ी है: जो सबक सीखे गए हैं वे समुदाय के भविष्य की रूपरेखा तय करेंगे, और उन्हें जिस तरह से सीखा गया है वह आनेवाले भविष्य को रोशन करता है।

अपनी ही प्रगतियों और अंतर्दृष्टियों से सम्पन्न, 1996 की ओर ले जाने वाले दशकों ने इस विषय में कोई संदेह नहीं रख छोड़ा था कि अनेक समाजों में बड़ी संख्या में लोग प्रभुधर्म की ध्वजा तले प्रवेश करने को तत्पर होंगे। तथापि, बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा प्रभुधर्म में नामांकित किए जाने के मामले चाहे जितने ही उत्साहवर्द्धक रहे हों, वे विकास की उस स्थायित्वपूर्ण प्रक्रिया के समान नहीं थे जो विविध प्रकार के परिवेशों में विकसित किया जा सकता था। समुदाय के सामने कई गहरे सवाल खड़े थे और उस समय उनका पर्याप्त रूप से निराकरण करने के लिए उसके पास बहुत ज्यादा अनुभव नहीं था। कैसे विस्तार की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों को सुगठन की प्रक्रिया के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ाया जाए और विकास की गति को लगातार बनाए रखने की लंबे अरसे से चली आ रही, अत्यंत दुरूह प्रतीत होने वाली चुनौती का समाधान निकाला जाए? कैसे व्यक्तियों, संस्थाओं और समुदायों को उन्नत किया जाए कि वे बहाउल्लाह की शिक्षाओं को कार्य रूप में ढाल सकें? और कैसे वे लोग जो प्रभुधर्म की शिक्षाओं की ओर आकर्षित हुए थे वे एक विश्वव्यापी आध्यात्मिक उद्यम में नायक बन सकते हैं?

और इस तरह, सदी के एक चौथाई काल पूर्व बहाई समुदाय ने, जो अपनी अग्रिम पंक्ति में अभी भी तीन धर्मभुजाओं को देखते थे, एक 'चार वर्षीय योजना' आरंभ की, यह पहले वाली योजनाओं से इस मायने में भिन्न थी कि उसका ध्यान एकमात्र इस लक्ष्य पर केन्द्रित था: समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया में उल्लेखनीय तेजी लाना। यही वह लक्ष्य था जिसने आगामी योजनाओं की श्रृंखला का रूप निर्धारित किया। समुदाय यह बात पहले ही समझ चुका था कि इस प्रक्रिया का मतलब केवल बड़े-बड़े समूहों द्वारा प्रभुधर्म में प्रवेश करना नहीं है, और न ही यह अनायास हो जाएगा, यह उद्देश्यपूर्ण, सुव्यवस्थित एवं त्वरित विस्तार और सुगठन में अंतर्निहित है। इस कार्य के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोगों की सूचित प्रतिभागिता की आवश्यकता थी, और 1996 में, इसके परिणामस्वरूप एक विशाल शैक्षणिक चुनौती स्वीकार करने के लिए बहाई विश्व का आह्वान किया गया। उससे यह आह्वान किया गया कि वह प्रशिक्षण संस्थानों का एक नेटवर्क संस्थापित करे जो विकास की

प्रक्रिया को अनवरत बनाए रखने की आवश्यक क्षमताओं से सम्पन्न व्यक्तियों का सतत प्रवाह सुनिश्चित करने पर ध्यान केन्द्रित करे।

बहाई मित्र यह जानते हुए इस दायित्व को पूरा करने के लिए उठ खड़े हुए कि शिक्षण के क्षेत्र में उनके द्वारा पूर्व में प्राप्त की गई विजयों के बावजूद, अभी भी उन्हें इस बाबत बहुत कुछ सीखना-समझना था कि कौन-सी क्षमताएं हासिल की जानी हैं और महत्वपूर्ण रूप से यह कि उन्हें आखिर कैसे हासिल किया जाए। कई रूपों में, समुदाय ने कार्य करके सीख हासिल की और उसने जो भी सबक सीखे उन्हें कालक्रम में विविध प्रकार के परिवेशों में क्रियान्वित करने के माध्यम से शोधित और परिष्कृत कर, अंततः शैक्षणिक सामग्रियों में शामिल किया गया। यह पहचाना गया कि कुछ खास गतिविधियां किसी जनसमुदाय की आध्यात्मिक आवश्यकताओं के प्रति सहज प्रत्युत्तर थीं। अध्ययन वृत्त कक्षाएं, बच्चों की कक्षाएं, भक्तिपरक बैठकें, और बाद में किशोर-समूह इस संदर्भ में महत्वपूर्ण होकर उभरे, और जब उन्हें सम्बंधित गतिविधियों से जोड़ा गया तो इससे उत्पन्न गत्यात्मकता एक जीवन्त सामुदायिक जीवन के प्रतिमान को उभारने में कारगर साबित हुई। और जब इन मूल गतिविधियों में भाग लेने वाले मित्रों की संख्या बढ़ी तो उनके मौलिक उद्देश्य में एक नया आयाम जुड़ गया। वे ऐसे प्रवेशद्वारों के रूप में काम करने लगे जिनके माध्यम से वृहत्तर समाज के युवाओं, वयस्कों और सारे परिवारों का बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से साक्षात्कार हुआ। यह भी स्पष्ट होने लगा था कि समुदाय-निर्माण की कार्यनीतियों पर विचार “समुदाय-समूह” (क्लस्टर) के परिप्रेक्ष्य में करना कितना व्यावहारिक है, समुदाय-समूह; वस्तुतः एक भौगोलिक क्षेत्र है जहां मर्यादित संख्या में लोग रहते हैं और जिसकी अपनी विशिष्ट सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताएं होती हैं। समुदाय-समूह स्तर पर सरल योजनाएं तैयार करने की क्षमता विकसित की जाने लगी और इस प्रकार की योजनाओं से प्रभुधर्म के विकास के कार्यक्रम उत्पन्न हुए जिन्हें इस तरह सुगठित किया गया कि वे गतिविधियों के त्रैमासिक चक्र के रूप में जाने गए। बहुत ही शीघ्र स्पष्टता का एक महत्वपूर्ण बिंदु उभरकर सामने आया: पाठ्यक्रमों की एक श्रृंखला के माध्यम से व्यक्तियों की गतिशीलता विकास की अनवरत धारा से समुदाय-समूहों की गतिशीलता प्रेरित होती और उसे अनवरत बनाए रखती है। इस परस्पर पूरक सम्बंध से सभी जगहों के मित्रों को अपने-अपने परिवेश में विकास की गत्यात्मकता का आकलन करने और बढ़ी हुई शक्ति की दिशा में अपना पथ प्रशस्त करने में सहायता मिली। जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे किसी भी समुदाय-समूह में जो कुछ भी घटित हुआ उसे दोनों ही दृष्टिकोणों से देखना लाभदायक रहेगा — एक तो बच्चों, किशोरों, और युवाओं एवं वयस्कों के लिए आयोजित तीन शैक्षणिक क्रियाओं के माध्यम से, और साथ ही विकास की लय के लिए अपरिहार्य गतिविधियों के चक्रों के नज़रिये से। एक पच्चीस वर्षीय उपक्रम के आंशिक भागों में से, विकास-प्रक्रिया की ज्यादातर पहचानने योग्य विशेषताओं में से अनेक विशेषताएं जो हमें आज देखने को मिल रही हैं, अच्छी तरह स्थापित होने लगी थीं।

जब मित्रों के प्रयासों में तेजी आई तो विश्वव्यापी महत्व के अनेक सिद्धान्त, अवधारणाएं और कार्यनीतियां ज्यादा सुस्पष्ट होकर क्रियाकलापों की एक रूपरेखा के रूप में निखरने लगीं जिसमें नए तत्वों का समावेश करते हुए उसे विकसित किया जा सकता था। यह रूपरेखा अपार ऊर्जा को निर्गत करने की दृष्टि से बड़ी ही आधारभूत साबित हुई। इसने मित्रों को अपनी शक्तियों को इस तरह से प्रवाहित करने में सहायता की जो, जैसाकि अनुभवों द्वारा झलकाया गया, स्वस्थ समुदायों के विकास के लिए बहुत ही लाभदायक थीं। लेकिन रूपरेखा कोई फॉर्मूला नहीं होती। रूपरेखा के विभिन्न तत्वों को ध्यान रखते हुए, जब किसी समुदाय-समूह, किसी स्थान या महज किसी पास-पड़ोस की वास्तविकता का आकलन किया जा रहा हो, गतिविधियों का एक प्रतिमान विकसित किया जा सका, जो शेष बहाई-जगत के सीखों के निचोड़ से बने, परन्तु उस स्थान विशेष के जरूरतों के प्रत्युत्तर देने में सक्षम रहा। एक ओर कठोर अपेक्षाएं और दूसरी ओर असीमित व्यक्तिगत

प्राथमिकताएं, इन दोनों के बीच के विरोधाभास से उन विविध प्रकार के साधनों के बारे में ज्यादा सूक्ष्म समझ का विकास हुआ जिनके माध्यम से व्यक्तियों द्वारा एक ऐसी प्रक्रिया को सहारा दिया जा सकता था जो अपने मूल रूप में सुसंबद्ध थी, और जैसे-जैसे अनुभव प्राप्त होते गए उन्हें निरंतर और अधिक परिष्कृत किया जाता रहा। इस रूपरेखा के अभ्युदय से जो प्रगति परिलक्षित हुई उसके बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए: सम्पूर्ण बहाई जगत के प्रयासों के सुसंगत और एकीकृत करने और उसके अग्रगामी यात्रा को तीव्र करने सम्बंधी अभिप्रायों से महत्वपूर्ण परिणाम प्रतिफलित हुए।

जब एक के बाद दूसरी योजना आती चली गई, और समुदाय-निर्माण के कार्य में संलग्नता का आधार और ज्यादा व्यापक हो गया तो संस्कृति के स्तर पर विकास ज्यादा स्पष्ट परिलक्षित होने लगे। उदाहरण के लिए, युवा पीढ़ियों को शिक्षित बनाने के महत्व, और इसी तरह, खास तौर पर किशोरों द्वारा प्रदर्शित असाधारण क्षमता की ज्यादा व्यापक सराहना होने लगी। एक साझे पथ पर एक-दूसरे सहायता की करना और साथ-साथ चलना, निरंतर सहयोग की परिधि को विस्तृत करना, वह प्रतिमान बन गये, जिससे सेवा के लिए क्षमता के विकास हेतु सभी प्रयास प्रेरित हुए। जैसे ही आध्यात्मिक संवेदनाओं की लौ जलाने और उसे तेज करने में अर्थपूर्ण वार्तालाप की शक्ति के बारे में जागरूकता बढ़ी, यहां तक कि मित्रों के बीच आपस में और उनके आस-पास के लोगों के साथ अंतर्क्रिया एक बदलाव से गुजरा। और महत्वपूर्ण बात यह थी कि बहाई समुदाय ने बढ़ते रूप से बाह्योन्मुखी दृष्टिकोण को अपनाया। प्रभुधर्म की संकल्पना के प्रति समुत्सुक कोई भी व्यक्ति शैक्षणिक गतिविधियों, उपासना सम्मिलनों तथा समुदाय-निर्माण कार्य के अन्य तत्वों का सक्रिय प्रतिभागी — और यहां तक कि संबद्धक या संयोजक भी — बन सकता; ऐसे लोगों के बीच से, बहुत से लोग बहाउल्लाह के प्रति अपनी आस्था भी प्रकट करते थे। इस तरह, समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया की अवधारणा उभरकर सामने आई जो कि सिद्धान्तों और पूर्वधारणाओं पर उतनी ज्यादा आश्रित नहीं थी जितनी कि इस वास्तविक अनुभव पर कि कैसे बड़ी तादाद में लोग प्रभुधर्म तक पहुंच सकते हैं, उससे सुपरिचित हो सकते हैं, उसके लक्ष्यों के साथ तादात्म्य बिठा सकते हैं, उसके कार्यकलापों से कैसे जुड़ सकते हैं, और बहुतेरे मामलों में उसे आत्मार्पित कैसे कर सकते हैं। वस्तुतः, जब एक के बाद एक कई क्षेत्रों में संस्थान प्रक्रिया को सुदृढ़ हुई तो 'योजना' के कार्य में हिस्सा बंटाने वाले व्यक्तियों की संख्या में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि होने लगी, और उनमें ऐसे भी लोग शामिल थे जो अभी हाल ही में प्रभुधर्म से परिचित हुए थे। लेकिन यह मात्र संख्या बढ़ाने की प्रेरणा से काम नहीं कर रही थी। ईश्वरीय शब्द के अध्ययन तथा एक गहन आध्यात्मिक घटनाचक्र के नायक बन सकने में प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता के बोध की बुनियाद पर टिकी, व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूपांतरण की संकल्पना ने एक सम्मिलित प्रयास की भावना को जन्म दिया था।

इस पच्चीस-वर्षीय अवधि की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक बहाई युवाओं द्वारा प्रदान की गई सेवा रही है, अपनी निष्ठा और वीरता से उन्होंने बहाई समुदाय के प्रयत्नों की अग्रिम कतार में अपनी उपयुक्त जगह बनाई है। प्रभुधर्म के शिक्षकों के रूप में और नवयुवाओं के शिक्षा-प्रदाताओं के रूप में, भ्रमणशील सह-शिक्षकों एवं होमफ्रंट पायनीयों के रूप में, समुदाय-समूह के संयोजकों और बहाई संस्थाओं के सदस्यों के रूप में — पांचों महादेशों में ये युवा लोग समर्पण और त्याग की भावना के साथ अपने समुदायों की सेवा के लिए उठ खड़े हुए। 'दिव्य योजना' की प्रगति सुनिश्चित करने वाले कर्तव्यों का निर्वहन कर, उन्होंने जिस परिपक्वता की झलक दिखाई है, वह उनकी आध्यात्मिक ऊर्जस्विता और मानवजाति के भविष्य की रक्षा के लिए उनकी प्रतिबद्धता की परिचायक है। सतत रूप से परिलक्षित इस परिपक्वता को मान्यता देते हुए, हमने

यह निर्णय लिया है कि इस रिज़वान के तुरन्त बाद, हालांकि आध्यात्मिक सभाओं में सेवा देने की पात्रता पाने के लिए बहाई धर्मानुयायी की आयु इक्कीस वर्ष ही रहेगी लेकिन बहाई चुनावों में मतदान कर सकने की आयु घटाकर अठारह वर्ष कर दी जाएगी। हमें इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सभी जगहों के वे बहाई युवा जो इस आयु तक पहुंच चुके हैं, “कर्तव्यनिष्ठा और कर्मठता के साथ” उस “पवित्र दायित्व” के निर्वाह में, जिसके लिए हर बहाई मतदाता का आह्वान किया गया है, अपने प्रति हमारे विश्वास की सत्यता को प्रमाणित करेंगे।

\*

हम अभिज्ञ हैं कि, स्वाभाविक रूप से, समुदायों के यथार्थों में भारी भिन्नता है। विभिन्न राष्ट्रीय समुदायों, और उन समुदायों के अंतर्गत आने वाले भिन्न-भिन्न स्थानों में, योजना-शृंखलाओं का आरंभ विकास के भिन्न-भिन्न बिंदुओं से हुआ। उसके बाद से उनके विकास की गति में भी अंतर रहा है और उन्होंने प्रगति के जो स्तर हासिल किए हैं उनमें भी भिन्नता है। अपने आप में यह कोई नई बात नहीं है। ऐसा हमेशा से होता आया है कि हर जगह की परिस्थितियों अलग-अलग होती हैं, और वहां की ग्रहणशीलता के स्तर भिन्न होते हैं। लेकिन हम यह भी देखते हैं कि अपने आस-पास और दूर-दराज़ के साथी समुदायों की सफलता से उमंगित होकर एक ज्वार-सा उठ रहा है जिसके माध्यम से ज्यादातर समुदायों की क्षमता, उनके आत्मविश्वास एवं संचित अनुभव, में वृद्धि हो रही है। एक उदाहरण के तौर पर, 1996 में जब मित्रगण प्रभुधर्म के लिए किसी नए स्थान का द्वार खोलने के लिए उठ खड़े होते थे तो उनके पास साहस, आस्था और श्रद्धा का कोई अभाव नहीं होता था, लेकिन आज सभी जगहों पर उनके साथी उन तमाम गुणों के साथ-साथ ज्ञान, अंतर्दृष्टियों और उन कुशलताओं से भी सम्पन्न हो चुके हैं जो कि समस्त बहाई विश्व द्वारा पच्चीस वर्षों तक विस्तार और सुगठन के कार्य को सुव्यवस्थित एवं परिष्कृत करने की दिशा में किए गए प्रयासों का संचित रूप है।

किसी समुदाय ने अपनी यात्रा चाहे जिस बिंदु से भी आरंभ की हो, किन्तु जब उसने आस्था, सतत परिश्रम और प्रतिबद्धता के साथ-साथ सीखने की तत्परता जैसे गुणों को शामिल किया तो उसने विकास की प्रक्रिया में प्रगति हासिल की है। वस्तुतः, योजनाओं की इस शृंखला की एक मधुर विरासत यह व्यापक बोध है कि विकास की ओर अग्रसर कोई भी प्रयास सीखने के प्रति रुझान से ही आगे बढ़ता है। यह सिद्धान्त इतना सीधा और सरल है कि उसके पीछे छुपे निहितार्थों के असली महत्व को हम समझ ही नहीं पाते। हम इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं करते कि अगर समय दिया जाए तो हर समुदाय-समूह विकास की अनवरत धारा के साथ प्रगति करेगा। समान परिस्थितियों और संभावनाओं वाले अन्य समुदायों की अपेक्षा, जिन समुदायों ने सर्वाधिक तेजी से विकास किया है उन्होंने विचार की एकता को पोषित करने और प्रभावी क्रियाशीलता के बारे में सीखने की क्षमता प्रदर्शित की है। और ऐसा करने में उन्होंने कोई संकोच किए बिना कार्य किया है।

सीखने की प्रतिबद्धता का अर्थ यह भी था कि गलतियां करने के लिए तैयार रहा जाए – और, निस्संदेह, कई बार गलतियां, असहजता का भाव लाई। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि शुरु-शुरु में अनुभव की कमी के कारण नई विधियों और तौर-तरीकों को अकुशल तरीके से इस्तेमाल किया गया। कई बार, समुदाय एक नई क्षमता अर्जित कर लेने के बाद दूसरी क्षमता के विकास में मशगूल हो गया और इस क्रम में पहले अर्जित की गई क्षमता को खो बैठा। नेक इरादे इस बात की गारंटी नहीं देते कि हमारे कदम गलत नहीं होंगे, और उनसे आगे बढ़ने के लिए विनम्रता एवं अनासक्ति, दोनों की जरूरत होती है। जब कोई समुदाय इस दृढ़ संकल्प पर टिका रहता है कि वह धैर्य रखेगा और स्वाभाविक रूप से हुई भूलों से सबक सीखेगा तो प्रगति कभी उसकी पहुंच से दूर नहीं रह सकती।

योजनाओं की शृंखला के आधे मुकाम पर पहुंचने के बाद, समाज के जीवन में समुदाय की संलग्नता पर ज्यादा प्रत्यक्ष रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाने लगा। अनुयायियों को इसके बारे में प्रयास के दो परस्पर-सम्बंधित क्षेत्रों के नज़रिये से देखने के लिए प्रोत्साहित किया गया — सामाजिक क्रिया एवं समाज में परिचलित परिसंवादों में भागीदारी। निस्संदेह, ये विस्तार एवं सुगठन के कार्य के विकल्प नहीं थे, उससे भटकाव की बात तो दूर है: बल्कि वे उसमें ही निहित थे। जो समुदाय जितना बड़ा मानव संसाधन काम में ला सका, वर्तमान समय की चुनौतियों के निराकरण हेतु बहाउल्लाह के प्रकटीकरण में निहित विवेक को प्रस्तुत कर पाने — उनकी शिक्षाओं को यथार्थ का जामा पहनाने — में उसे उतनी ही बड़ी क्षमता प्राप्त हुई। और इस अवधि में मानवजाति के अशांत घटनाक्रम इस बात को रेखांकित करते हुए प्रतीत होते थे कि उसे 'दिव्य चिकित्सक' द्वारा अनुशंसित उपचार की कितनी अधिक आवश्यकता है। इन सबके निहितार्थों में धर्म की एक ऐसी अवधारणा व्याप्त थी जो वृहत्तर विश्व में प्रचलित अवधारणाओं से सर्वथा भिन्न थी: वह संकल्पना जो धर्म को सतत-विकासशील सभ्यता को आगे बढ़ाने वाली एक सामर्थ्यवान शक्ति मानती थी। यह समझा गया कि ऐसी सभ्यता स्वतः, अपने आप, प्रकट नहीं हो जाएगी — उसके अभ्युदय के लिए प्रयत्न करना बहाउल्लाह के अनुयायियों का ध्येय है। और इस ध्येय की मांग थी कि सुव्यवस्थित रूप से सीखने की उसी समान प्रक्रिया को सामाजिक क्रिया के काम और लोक परिसंवादों में संलग्नता के क्षेत्र में भी लागू किया जाए।

पिछले ढाई दशकों के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए, सामाजिक क्रिया के उपक्रम की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और इससे कार्यकलाप का असाधारण प्रस्फुटन हुआ है। 1996 से तुलना करते हुए जबकि साल-दर-साल करीब 250 सामाजिक एवं आर्थिक विकास प्रायोजनों का नियमित संचालन किया जा रहा था, वहीं अब ऐसे प्रायोजनों की संख्या 1500 है और बहाई-प्रेरित संस्थाओं की संख्या चौगुनी बढ़कर 160 हो गई है। हर साल सामाजिक क्रिया की 70,000 से भी अधिक तृणमूल स्तर की अल्प-अवधि वाली पहलें शुरू की जा रही हैं जो कि पचास गुणा वृद्धि का द्योतक है। अब बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन द्वारा प्रदत्त समर्पित सहयोग एवं उत्प्रेरण के परिणामस्वरूप हम इन समस्त प्रयासों में सतत वृद्धि की आशा करते हैं। इसके साथ ही, समाज में परिचलित परिसंवादों में बहाई सहभागिता में भी अपार वृद्धि हुई है। ऐसे मामलों के अलावा भी जबकि कार्यक्षेत्र अथवा व्यक्तिगत प्रसंग में मित्रों को यह महसूस होता है कि वे बातचीत के संदर्भ में बहाई दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकते हैं, परिसंवादों में उल्लेखनीय रूप से और अधिक औपचारिक भागीदारी बढ़ी है। हम न केवल बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के अत्यंत व्यापक प्रयासों एवं निरंतर परिष्कृत होते योगदानों को ध्यान में रख रहे हैं — जिसने इस अवधि में अफ्रिका, एशिया और यूरोप में भी अपने कार्यालयों का विस्तार कर लिया है — बल्कि व्यापक रूप से परिवर्द्धित एवं अत्यंत सुदृढकृत राष्ट्रीय बाह्य मामलों के कार्यालयों के नेटवर्क का भी जिन्होंने प्रयास के इस क्षेत्र पर मुख्य रूप से अपना ध्यान केन्द्रित किया; इसके अलावा, व्यक्तिगत अनुयायियों ने भी विशिष्ट क्षेत्रों में बहुत ही अंतर्दृष्टिपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान दिए। यह सबकुछ बहुत हद तक उस प्रतिष्ठा, प्रशंसा और सराहना को वर्णित करता है जो कि समाज के सभी तबकों के प्रबुद्ध लोगों एवं अन्य प्रमुख हस्तियों द्वारा बार-बार प्रभुधर्म, उसके अनुयायियों और उसके गतिविधियों के प्रति व्यक्त की जाती रही है।

पच्चीस वर्षों की सम्पूर्ण अवधि के सिंहावलोकन में, बहाई जगत की अनेक प्रकार की प्रगतियों को देखकर हम विस्मित रह जाते हैं। प्रभुधर्म का बौद्धिक जीवन पुष्पित हुआ है, जिसकी झलक न केवल उन प्रयासों के क्षेत्रों में प्राप्त की गई प्रगतियों से मिलती है जिनकी ऊपर चर्चा की गई है, बल्कि बहाई लेखकों द्वारा प्रकाशित किए गए उच्च-स्तरीय साहित्य, बहाई शिक्षाओं के आलोक में अध्ययन के कतिपय नए विषयों के

अन्वेषण, तथा *इंस्टीट्यूट फॉर स्टडीज इन ग्लोबल प्रॉस्पेरेटी* द्वारा सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किए जाने वाले अंतरस्रातक एवं स्रातक सेमिनारों के माध्यम से भी, जो प्रभुधर्म की संस्थाओं के सहयोग से अब 100 से भी अधिक देशों में बहाई युवाओं को अपनी सेवा प्रदान कर रहा है। बहाई उपासना गृहों के निर्माण की दिशा में किए गए प्रयासों में स्पष्ट रूप से तेजी आई है। अंतिम मातृ-मंदिर का निर्माण सैंटिएगो (चिली) में हो गया, और दो राष्ट्रीय एवं पांच स्थानीय मशरिकुल-अज़कारों के निर्माण-कार्य आरंभ किए गए : बाटमबांग (कंबोडिया) और नॉर्ट डेल काउका (कोलंबिया) के उपासना गृहों ने लोगों के लिए अपने कपाट भी खोल दिए हैं। बहाई उपासना मन्दिर — चाहे वे नवनिर्मित हों या पुराने समय से संस्थापित — सामुदायिक जीवन के केन्द्र में निरंतर अपना स्थान बना रहे हैं। ईश्वर के मित्रों द्वारा आरंभ किए गए विविध प्रकार के उपक्रमों के लिए सभी तबकों के अनुयायियों द्वारा उदार रूप से भौतिक सहायता अर्पित की गई है। सामूहिक आध्यात्मिक जीवन्तता के सरल पैमाने से देखने पर, अत्यंत आर्थिक उथल-पुथल के दौर में भी बहाई कोषों के महत्वपूर्ण प्रवाह को जिस उदारता और त्याग-भावना से बनाए रखा गया है — बल्कि कहें कि उसे सशक्त बनाया गया है — वह बहुत ही प्रभावकारी है। बहाई प्रशासन के दायरे में, बढ़ती हुई जटिलताओं के साथ अपने-अपने समुदायों के मामलों के प्रबंधन में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की क्षमता बहुत समृद्ध हुई है। वे सलाहकारों के साथ सहयोग की नई ऊंचाइयों को छूते हुए विशेष रूप से लाभान्वित हुए हैं और, जिन्होंने पूरे विश्व में तृणमूल स्तरों से प्राप्त अंतर्दृष्टियों को सुव्यवस्थित रूप से सहेज कर और उनका व्यापक संवितरण सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह वह अवधि भी थी जब क्षेत्रीय बहाई परिषद प्रभुधर्म की एक पूर्ण विकसित संस्था के रूप में उभरकर सामने आई, और अब 230 क्षेत्रों में ये परिषदें और उनकी देखरेख में काम करने वाले प्रशिक्षण संस्थानों ने विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में अपने अपरिहार्य महत्व को साबित कर दिया है। भविष्य में हुकुकुल्लाह के मुख्य न्यासी, डॉ. अली मुहम्मद वर्गा, के काम-काज के विस्तार के लिए 2005 में 'हुकुकुल्लाह के न्यासियों का अंतर्राष्ट्रीय मंडल' (*इंटरनेशनल बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ऑफ हुकुकुल्लाह*) संस्थापित किया गया; आज यह पूरी पृथ्वी को अपने दायरे में समेटते हुए, कम से कम 33 राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय न्यासी मंडलों के कार्यों का संयोजन कर रहा है, और फिर ये न्यासी मंडल 1,000 से भी अधिक प्रतिनिधियों के कार्य में मार्गदर्शन दे रहे हैं। इसी अवधि के दौरान बहाई विश्व केन्द्र में बहुत सारे विकास हुए: बाब की समाधि के सोपानों और आर्क के दो भवनों का कार्य पूरा हुआ और अब्दुल-बहा की समाधि का निर्माण-कार्य आरंभ हुआ, इसके अलावा, प्रभुधर्म के अनमोल पवित्र स्थलों को सुदृढ़ एवं सुरक्षित करने सम्बंधी अनेक परियोजनाएं भी उल्लेखनीय हैं। बहाउल्लाह की समाधि और बाब की समाधि को मानवजाति के लिए अपरिमित महत्व के स्थान, के रूप में 'विश्व के धरोहर-स्थलों', की मान्यता मिली। सैकड़ों-हजारों की तादाद में लोगों की झुंड इन पवित्र स्थलों की ओर उमड़ने लगी। कुछ वर्ष तो ऐसे थे जबकि लोगों की तादाद पन्द्रह लाख तक पहुंच गई और इसके साथ ही, विश्व केंद्र नियमित रूप से सैकड़ों की संख्या में तीर्थयात्रियों का स्वागत करते रहें, कई बार उनकी संख्या एक वर्ष में 5000 से भी ऊपर तक पहुंची, और लगभग इतनी ही संख्या में अन्य बहाई आगंतुक भी आते रहे; इस संख्यात्मक वृद्धि से हम उतने ही प्रसन्न हैं जितने कि तीर्थयात्रा से लाभान्वित होने वालों के बीच विविध पृष्ठभूमि के लोगों और राष्ट्रीयताओं के प्रतिनिधित्व से। अब दस भाषाओं में उपलब्ध 'बहाई.ओआरजी' (*Bahai.org*) वेबसाइटों के विस्तारित होते परिवार के एक अत्यंत ही उल्लेखनीय सदस्य के रूप में 'बहाई रेफरेंस लायब्रेरी' को आरंभ किए जाने के साथ-साथ पवित्र पाठों के अनुवाद, प्रकाशन और संवितरण के काम में भी बहुत ही तेजी आई है। विश्व केन्द्र तथा अन्य स्थानों में विविध प्रकार के कार्यालयों और एजेन्सियों की स्थापना की गई है जिन्हें सम्पूर्ण बहाई जगत में किए जा रहे प्रयासों के अनगिनत क्षेत्रों में प्रस्फुटित हो रही

सीखने की प्रक्रिया में सहायता देने का दायित्व सौंपा गया है। प्रभुधर्म में हमारे भाइयों और बहनों, यह सबकुछ जिसका हमने विवरण दिया है, वह 'विश्व के उस प्रवंचित' के प्रति आपकी धर्मनिष्ठा से उपजे आख्यान का मात्र एक छोटा-सा हिस्सा है। हम तो केवल उन मर्मस्पर्शी शब्दों को ही प्रतिध्वनित कर सकते हैं जिन्हें एकबार प्रिय 'मास्टर' ने भावाभिभूत होकर उचारा था: "हे बहाउल्लाह! आपने यह कैसा करिश्मा कर डाला?"

\*

एक शताब्दी के चौथे हिस्से के केन्द्रीय परिदृश्य से निहारते हुए, अब हम अपना ध्यान हाल की पांच वर्षीय योजना की ओर केन्द्रित करते हैं — एक ऐसी योजना जो कई रूपों में विगत सभी योजनाओं से अलग रही। इस योजना में हमने दुनिया के बहाईयों से आग्रह किया कि पिछले बीस वर्षों में उन्होंने जो कुछ भी सीखा उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हुए उसे पूर्ण प्रभाव में अमल करें। हमें खुशी है कि इस सम्बंध में हमने जितनी आशा की थी हमें उससे भी कहीं ज्यादा प्राप्त हुआ, 'आशीर्वादित सौन्दर्य' के अनुयायियों से हमें बड़ी उम्मीदें स्वाभाविक हैं, लेकिन उनके भागीरथ प्रयत्नों से जो कुछ भी हासिल हुआ उनकी खासियत सचमुच ही बड़ी विस्मयकारी थी। यह पच्चीस वर्षों के सतत समय में प्राप्त की गई उपलब्धि का सिरमौर था।

यह योजना दो पवित्र द्विशताब्दियों से त्रिभाजित होने के कारण भी विशेष रूप से उल्लेखनीय थी — और इन दोनों में से प्रत्येक ने पूरे विश्व के स्थानीय समुदायों को ऊर्जा से भर दिया। निष्ठावानों के समूहों ने अभूतपूर्व पैमाने पर, और बड़ी सहजता के साथ, ईश्वर के प्रकटावतार के जीवन के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए समाज के सभी तबके के लोगों के साथ कार्य करने की क्षमता दिखलाई। यह अधिक व्यापक तथ्य का एक सबल संकेतक था: प्रभुधर्म की उन्नति के लिए विराट आध्यात्मिक ऊर्जाओं को विमुक्त करने का माध्यम बन सकने की क्षमता। इसका प्रत्युत्तर इतना शानदार था कि यह कई जगहों में तो प्रभुधर्म, राष्ट्रीय स्तर पर अनभिज्ञता से बाहर ला दिया। ऐसे परिवेशों में जहां इसकी उम्मीद नहीं की जा रही थी, शायद किसी संभावना की तलाश भी नहीं की गई थी, वहां प्रभुधर्म के प्रति अपार ग्रहणशीलता दृष्टिगोचर हुई। हजारों और हजार लोग भक्ति की उस चेतना के प्रत्यक्ष संसर्ग में आने से अभिभूत हो उठे जो आज सभी जगहों के बहाई समुदायों की विशेषता बन गई है। बहाई पवित्र दिवस के आयोजन से क्या कुछ संभव हो सकता है दृष्टिकोण को अपरिमित रूप से व्यापक बनाया गया।

सरल सांख्यिक शब्दावली में कहें तो इस योजना की उपलब्धियां 1996 के बाद की सभी योजनाओं से काफी बढ़-चढ़कर रही। इस योजना के आरंभ के समय, एक निश्चित समय में 100,000 से कुछ ज्यादा संख्या में मूल क्रियाकलापों को संचालित करने की क्षमता विद्यमान थी — वह क्षमता जो कि बीस सालों के साझा प्रयास से प्रतिफलित हुई थी। अब एक ही समय में 300,000 मूल गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। उन गतिविधियों में बीस लाख से भी अधिक लोग भाग ले रहे हैं, और यह भी लगभग तीन गुणा वृद्धि का द्योतक है। 329 राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान अपना काम कर रहे हैं, और उनकी क्षमता इस तथ्य से प्रमाणित होती है कि दस लाख के तीन-चौथाई लोग पाठ्य-अनुक्रम की कम से कम एक पुस्तक को पूरा करने में समर्थ हुए हैं। व्यक्तियों द्वारा पूर्ण किए गए पाठ्यक्रमों की संख्या भी अब बीस लाख हो गई है — पांच सालों में एक तिहाई से भी ज्यादा वृद्धि।

विकास कार्यक्रमों को पूरी दुनिया में जिस तीव्र गति से संचालित किया जा रहा है वह अपने आप में एक प्रभावी कहानी कहती है। पांच वर्षों की इस अवधि में, हमने 5,000 समुदाय-समूहों में से प्रत्येक में, जहां

यह प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी, विकास की गति को तेज करने का आह्वान किया था। यह आह्वान पूरी दुनिया में गहन प्रयास की प्रेरणा बन गया। इसके परिणामस्वरूप, गहन विकास कार्यक्रमों की संख्या दोगुनी से भी ज्यादा हो गई और अब वह करीब 4,000 है। विश्वव्यापी स्वास्थ्य-संकट के दौरान नए गांवों और पास-पड़ोसों में प्रभुधर्म के द्वार खोलने अथवा महामारी के आरंभ होते समय जो गतिविधियां आरंभिक अवस्था में थे उन्हें विस्तारित करने में कठिनाइयां उपस्थित हो जाने के कारण योजना के अंतिम वर्ष में कुल संख्या में और अधिक वृद्धि कर पाना संभव नहीं हो पाया। लेकिन कहने को अभी और भी बहुत कुछ है। योजना के आरंभ में, हमने यह आशा प्रकट की थी कि ऐसे समुदाय-समूहों की संख्या में सैकड़ों की बढ़ोत्तरी होगी जहां यह सीख लेने के परिणामस्वरूप कि बड़ी संख्या में लोगों को अपनी गतिविधियों में कैसे शामिल किया जाए, मित्रों ने विकास के सतत प्रवाह में मील के तीसरे पत्थर को पार कर लिया था। उस समय उनकी कुल संख्या करीब 40 देशों में लगभग 200 थी। पांच साल बाद, अब यह लगभग 100 देशों में 1,000 की आश्चर्यजनक संख्या तक जा पहुंची है — दुनिया के सभी गहन विकास कार्यक्रमों की एक चौथाई, और एक ऐसी उपलब्धि जो हमारी अपेक्षाओं से कहीं बढ़कर है। और इसके बावजूद, ये आंकड़े भी उन चरम ऊंचाइयों के संकेतक नहीं हैं जहां आज बहाई समुदाय जा पहुंचा है। 30 से भी अधिक ऐसे समुदाय-समूह हैं जहां सतत रूप से जारी मूल गतिविधियों की संख्या 1,000 से भी ज्यादा है; कई जगहों पर उनकी संख्या कई हजारों में है और उनमें 20,000 से भी ज्यादा सिर्फ एक समुदाय-समूह में सहभागी हैं। बढ़ती हुई संख्या में स्थानीय आध्यात्मिक सभाएं अब उन शैक्षणिक कार्यक्रमों के प्रस्फुटन के पोषक हैं जो किसी गांव के दायरे में लगभग सभी बच्चों और किशोरों की जरूरतें पूरा कर रहे हैं, कुछ नगरीय पास-पड़ोसों में भी यह वास्तविकता उभरकर सामने आ रही है। ऐसे कई उल्लेखनीय उदाहरण हैं जिनसे ज्ञात होता है कि बहाउल्लाह के प्राकट्य का आकर्षण अब व्यक्तियों, परिवारों और सगे-सम्बंधियों की हदों को भी पार कर गया है — देखा यह जा रहा है कि समस्त जनसमुदाय एक सर्वमान्य केन्द्र की ओर गतिशील हैं। कई अवसरों पर, विरोधी समूहों के बीच युगों से चला आ रहा शत्रुभाव अब पीछे छूट चुका है, और कतिपय सामाजिक संरचनाएं और गत्यात्मकताएं दिव्य शिक्षाओं के आलोक में रूपांतरित होने लगी हैं।

ऐसी प्रभावशाली प्रगतियों से हम अति आनंदित हुए बिना नहीं रह सकते। बहाउल्लाह के धर्म की समाज-निर्माणकारी शक्ति अब ज्यादा से ज्यादा स्पष्टता के साथ उजागर होने लगी है, और यही वह मजबूत बुनियाद है जिसपर आगामी नौ वर्षीय योजना का निर्माण किया जाएगा। जैसी कि आशा की गई थी, उल्लेखनीय रूप से सशक्त समुदाय-समूहों ने स्वयं को अपने पड़ोसियों के लिए ज्ञान के एक कोश और संसाधन के रूप में प्रमाणित किया है। और जिन क्षेत्रों में ऐसे एक से अधिक समुदाय-समूह हैं उन्होंने एक के बाद एक समुदाय-समूहों में विकास की गति को तेज करने के साधनों का ज्यादा सरलता से विकास कर लिया है। लेकिन हम एकबार फिर इस बात पर जोर देना चाहेंगे कि प्रगति लगभग हर जगह हुई है, एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच प्रगति का यह अन्तर केवल अंशों का है। समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया के बारे में समुदाय की सामूहिक समझ और किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में इस प्रक्रिया को उत्प्रेरित कर सकने की अपनी क्षमता में उनका विश्वास उन स्तरों तक बढ़ा है जिनकी दशकों पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वे गहरे सवाल जो एक लम्बे अरसे से घुमड़ रहे थे, और 1996 में जिनपर प्रखर रूप से हमने ध्यान केन्द्रित किया था, बहाई जगत ने भरोसे के साथ उनके उत्तर दे दिए हैं। अनुयायियों की एक पूरी पीढ़ी मौजूद है जिनके समस्त जीवन पर समुदाय की प्रगति का छाप पड़ा हुआ है। लेकिन जहां ज्ञान के अग्रणी मोर्चों का विस्तार किया जा रहा है उन अनेक



समुदाय-समूहों में जिस पैमाने पर गतिविधियां हुई हैं उसने 'समूहों द्वारा प्रवेश' की प्रक्रिया की उल्लेखनीय प्रगति को ऐतिहासिक दृष्टि से एक विलक्षण प्रगति में बदल दिया है।

बहुत से लोग इस बात से सुपरिचित होंगे कि धर्म-संरक्षक ने बहाई धर्म के 'युगों' को किस तरह क्रमिक 'कालखंडों' में विभाजित किया था; रचनात्मक युग का पांचवां काल 2001 में आरंभ हुआ। लेकिन यह बात कमतर मालूम है कि धर्म-संरक्षक ने 'दिव्य योजना' के 'कालखंडों', और इन कालखंडों के अलग-अलग 'चरणों', की ओर भी खास तौर पर संदर्भित किया था। उस दौर में जबकि 'प्रशासनिक व्यवस्था' की स्थानीय एवं राष्ट्रीय संस्थाओं का संस्थापन और सुदृढीकरण किया जा रहा था, दो दशकों तक लम्बित रखे जाने के बाद, अब्दुल-बहा द्वारा संकल्पित 'दिव्य योजना' का शुभारंभ औपचारिक रूप से 1937 में, उसके प्रथम कालखंड के प्रथम चरण के आरंभ के साथ, किया गया था: सात वर्षीय योजना जिसे धर्म संरक्षक ने उत्तरी अमेरिका के बहाई समुदाय को सौंपा था। यह प्रथम काल 1963 में 'दस वर्षीय धर्म-युद्ध' (टेन इयर क्रूसेड) की पूर्णाहुति के साथ समाप्त हो गया, जिसके परिणामस्वरूप प्रभुधर्म की ध्वजा पूरी दुनिया में स्थापित की गई। दूसरे काल का आरंभिक चरण नौ वर्षीय योजना के साथ शुरू हुआ, और उसके बाद कम से कम दस 'योजनाएं' आईं इन योजनाओं की अवधियां बारह महीने से लेकर सात वर्षों तक थीं। इस दूसरे कालखंड के आरंभ में, बहाई जगत समूहों द्वारा प्रभुधर्म में शामिल होने की उस अत्यंत आरंभिक शुरुआत का साक्षी बना था जिसकी पूर्वकल्पना 'दिव्य योजना के प्रणेता' ने की थी; उसके बाद के दशकों में, 'महानतम नाम' के समुदाय के अंतर्गत समर्पित अनुयायियों की कई पीढ़ियों ने स्थायित्वपूर्ण एवं व्यापक पैमाने पर वांछित विकास की परिस्थितियां उत्पन्न करने के लिए 'स्वर्गिक द्राक्षा-वाटिका' में परिश्रम किया है। और रिज़वान के इस भव्य अवसर पर, उन परिश्रमों के सुफल कितने प्रचुर हैं! अपार संख्या में लोगों द्वारा समुदाय की गतिविधियों में भाग लेना, प्रभुधर्म की लौ से प्रदीप्त होना और स्फूर्ति के साथ योजना की अग्रणी कतार में सेवा देने के लिए उठ खड़ा होना — यह परिदृश्य अब आस्था के साथ संजोए गए पूर्वानुमान से भी आगे बढ़कर पुनरावृत्त यथार्थ में बदल चुका है। ऐसी मुखर और स्पष्ट प्रगति प्रभुधर्म के इतिहास में दर्ज किए जाने योग्य है। प्रफुल्लित हृदय के साथ, हम घोषणा करते हैं कि 'मास्टर' की दिव्य योजना का तीसरा कालखंड अब आरंभ हो चुका है। उनकी योजना चरण-दर-चरण, कालखंड-से-कालखंड प्रकट होती रहेगी, तबतक जबतक कि प्रभु-साम्राज्य का प्रकाश हर हृदय को आच्छादित नहीं कर देता।

\*

परमप्रिय मित्रों, दिव्य योजना के दूसरे काल के समापन की घोषणा करने वाले इस पांच-वर्षीय उपक्रम का सिंहावलोकन तबतक पूरा नहीं होगा जबतक कि हम योजना के अंतिम वर्ष में आने वाले उन उथल-पुथल भरे घटनाक्रमों की ओर विशेष रूप से इंगित नहीं करेंगे और जो अभी भी जारी हैं। इस अवधि के दौरान ज्यादातर देशों में व्यक्तिगत रूप से परस्पर कार्य-व्यवहार करने पर लागू घटते-बढ़ते प्रतिबंधों ने कदाचित्त समुदाय के सामूहिक प्रयासों पर वज्रपात ही कर दिया होता, और उससे उबर पाने में वर्षों लग जाते, लेकिन दो कारण हैं कि ऐसा क्यों नहीं हो पाया। पहला कारण था मानवजाति की सेवा करने के बहाईयों के कर्तव्य के प्रति व्यापक जागरूकता जो कि संकट और आपदा के समय और भी प्रबल हो उठी। अन्य था उस जागरूकता को अभिव्यक्त कर पाने के लिए बहाई जगत की क्षमता में असाधारण वृद्धि। सुव्यवस्थित क्रिया की पद्धति को अपनाने की वर्षों पुरानी आदत के कारण, मित्रगण एक अपूर्वकल्पित संकट के क्षण में अपनी रचनात्मकता और

उद्देश्य-निष्ठा का प्रभाव उत्पन्न करने में सफल हुए, और साथ ही वे यह भी सुनिश्चित कर सके कि उनके द्वारा अपनाए गए नए तरीके उस रूपरेखा से सुसंगत हों जिसे पूर्णता प्रदान करने में उन्होंने क्रमिक रूप से आने वाली योजनाओं में प्रयत्न किए थे। किंतु उन गंभीर विपत्तियों की अनदेखी नहीं की जा सकती जिन्हें अपने देशवासियों के साथ-साथ हर जगह के बहाईयों को झेलनी पड़ी; तथापि, इन घोर विपत्तियों के दौरान भी प्रभुधर्म के अनुयायियों का ध्यान केन्द्रित रहा। जरूरतमंद समुदायों के लिए संसाधन जुटाए गए, जहां कहीं संभव था वहां चुनाव सम्पन्न हुए और तमाम परिस्थितियों में प्रभुधर्म की संस्थाओं ने अपने कर्तव्यों का अनवरत रूप से निर्वहन किया। यहां तक कि कई साहसिक कदम भी उठाए गए। 'साओ टॉम ऐंड प्रिंसिपी' की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा का पुनर्गठन इस रिज़वान में किया जाएगा, और विश्व न्याय मंदिर के दो नए स्तम्भ तैयार होंगे: क्रोएशिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा जिसका मुख्यालय ज़ाग्रेब में होगा, और टीमोर-लेस्टे की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा जिसका मुख्यालय डिली में होगा।

और अब शुरु होती है एक वर्षीय योजना। इसके उद्देश्य और इसकी आवश्यक बातों का निरूपण पहले ही 'संविदा दिवस' पर भेजे गए हमारे संदेश में किया जा चुका है; यह योजना भले ही संक्षिप्त है किंतु यह बहाई जगत को आगामी नौ वर्षीय योजना के लिए तैयार करने के लिए पर्याप्त होगी। विशेष सामर्थ्य का काल जो 'दिव्य योजना की पातियों' को प्रकट किए जाने के अवसर पर आरंभ हुआ था, अब्दुल-बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी के साथ, 'रचनात्मक युग' की पहली सदी के समापन और दूसरी सदी के आरंभ को रेखांकित करते हुए, शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। निष्ठावान लोगों का समूह इस नई योजना में उस समय प्रवेश कर रहा है जब अपनी असुरक्षा की कलाई खुलने के माध्यम से दंडित हो चुकी मानवजाति वैश्विक चुनौतियों के निराकरण के लिए सहयोग की आवश्यकता के प्रति ज्यादा जागरूक प्रतीत होने लगी है। इसके बावजूद, कलह, स्वार्थ, पूर्वाग्रह और बंद मानसिकता जैसी अडियल आदतें एकता की दिशा में अग्रसर होने में अनवरत रूप से बाधक बनी रहती हैं, बावजूद इसके कि समाज में सतत बढ़ती हुई संख्या में लोग अपने वचन और कर्म से यह झलका रहे हैं कि वे भी मानवजाति की अंतर्निहित एकता की व्यापक स्वीकृति के आकांक्षी हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि राष्ट्रों का परिवार सबकी भलाई के निमित्त अपने मतभेदों को दरकिनार करने में सफल हो सके। आने वाले महीनों को घेरने वाली अनिश्चितताओं के बावजूद, हम बहाउल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि जिन संपुष्टियों ने उनके अनुयायियों को अभी तक सहारा दिया है उन्हें वे और अधिक प्रचुरता प्रदान करें ताकि आप अपने ध्येय-पथ पर आगे बढ़ सकें, आपके चित्त की शांति उस दुनिया के विक्षोभ से अबाधित रहे जिसके लिए बहाउल्लाह के आरोग्यकारी संदेश की जरूरत पहले से भी अधिक तीव्र है।

दिव्य योजना एक नए कालखंड, एक नए चरण में प्रवेश करती है। पन्ना पलट गया है।

-विश्व न्याय मन्दिर

\*\*\*